School of ------------------------------

Certificate

I hereby declare that the short synopsis " KUNWAR CHANDRAPRAKASH SINGH KE KAVYON ME SANSKRITIK RASHTRAWAAD" being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in(HINDI) under school of HUMANATIES of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2023-24.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. / Dr. SATYAPAL TIWARI and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

Vishal Bharti
Signature:

Name of Candidate:- VISHAL BHARTI
(En. No.:- 2201306)

Research Supervisor & Co-Supervisor (If any)
(Signature)
Name:- Prof. SATYAPAL TIWARI
Faculty of (Subject ---)

(Signature)
Name:- Prof. SATYAPAL TIWARI
(Director of Concerned School of Studies)

31/07/25
(Signature)
(Name)
(Secretary of RDC/ Director, R&D Cell)

(Approved Research Topic)

कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह के काव्यों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

KUNWAR CHANDRAPRAKASH SINGH KE KAVYON ME SANSKRITIK RASHTRAWAAD

उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
इलाहाबाद
॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI

To

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

Submitted by

विशाल भारतीय

Name of Guide-
Prof. Satyapal Tiwari
शोध निर्देशक का नाम–
प्रो0 सत्यपाल तिवारी

Name of Candidate-Vishal Bharti
शोधकर्ता का नाम–विशाल भारतीय
Enrollment No.:-2201306
नामाकंन सं0–2201306
Subject-Hindi Literature
विषय–हिन्दी साहित्य

Faculty of (Hindi)
मानविकी विद्याशाखा
School of Humanities
U.P. Rajarshi Tandon Open University
उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
Shantipuram, (Sector-F) Phaphamau, Prayagraj-211013

CONTENTS

S. No.	Description	Page No.
1	Introduction	1-2
2	Literature Review	2-7
3	Description Broad Area	7-8
4	Objectives of the Study	8-8
5	Research Methodology	8-11
6	Expected Outcome of the Research	11
	References	
	Plagiarism Report	

Vishal Bharti

कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह के काव्यों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

सारः—

''कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह के काव्यों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद'' शीर्षकोपहित प्रस्तावित शोधकार्य छायावादी कवियों की काव्य—कृतियों में निदर्शित सांस्कृतिक राष्ट्रीयता विषयक तथ्यों के उद्‌घाटनार्थ एक विश्लेषणात्मक अध्ययन की अपेक्षित प्रस्तुति है। आलोच्य महाकवि के महत्कार्यों के प्रकाशनार्थ अद्यावधि कोई शोधकार्य उपलब्ध नहीं है। इसी को दृष्टिगत करते हुए उक्त संज्ञक शीर्षक की विवक्षा में यह शोधकार्य प्रस्तुत किया जा रहा है।

आचार्य कुंवर जी छायावादी परम्परा के उन्नायक कवि हैं। अतः उनकी कृतियों में छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ; प्रेम, सौन्दर्य, दर्शन, आध्यात्मिकता, राष्ट्रीयता, प्रकृति—चित्रण आदि, आद्योपान्त सहजरूपेण अनुगुम्फित हैं।

वे 'निराला' से प्रेरित होकर काव्य—सर्जना में प्रवृत्त हुए तथा उन्हीं के समान राष्ट्रीय जागरण के कवि भी हैं। उनकी सांस्कृतिक—राष्ट्रीयता उन्हें भारतवर्ष की आर्ष—परम्परा के गौरवशाली पक्षों से सम्बद्ध करती है। अतः वे राष्ट्रवाद के अतुलनीय कवि हैं। उनकी कविता की मूल चेतना सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय है, परन्तु वस्तुस्थिति यह भी है कि उनकी कविता में छायावाद की सम्भावित समस्त विशेषताएँ भी समाहित हैं।

keyword:- कुँवर चन्द्रप्रकाश, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, आध्यात्मिकता, प्रकृति—चित्रण

Vishal Bharti

उपर्युक्त सन्दर्भ में प्रो0 शिवमोहन सिंह द्वारा संकलित–सम्पादित कुँवर जी के काव्य–संग्रह 'सांस्कृतिक राष्ट्रीय कविता' के आलोडन–विलोडन से उनका व्यक्तित्व अपने सम्पूर्ण रूप छवियों के साथ भास्वर रूपेण दृष्टिगोचर होने लगता है। सांस्कृतिक राष्ट्रीयता एक सिद्धान्त भी है, भारतीय संस्कृति का अभिज्ञान भी है तथा प्रत्येक भारतीय की अन्तश्चेतना में विद्यमान मूल–भाव भी है, जिसका प्रभाव देश की राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति पर भी अवश्यमेव पड़ता ही है। परस्तावित शोध–कार्य राष्ट्रवाद एवं अतिराष्ट्रवाद के मध्य अन्तर को रेखांकित कर संस्कृति संबलित राष्ट्रवाद की साम्प्रतिक आवश्यकता की स्थापना हेतु अध्ययन एवं समीक्षात्मक मूल्यांकन है।

1. **शोध–विषय की प्रस्तावना**

भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा भारतीय संस्कृति के उत्पत्तिकाल से ही परिलक्षित होती है। वस्तुतः यह भारतीय आत्मा को संदर्भित करने वाला अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रत्यय स्वीकार किया गया है। प्रसंगतः डॉ0 प्रभात झा के शब्दों में–'भारत की प्रकृति ही उसकी संस्कृति है और जो यह संस्कृति है, वही भारत का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है।'

1857 ई0 के पश्चात् हिन्दी साहित्य में धीरे–धीरे राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रसार आरम्भ हुआ। श्री रामगोपाल सिंह के अनुसार इस युग का साहित्य 'सामाजिक एंव सांस्कृतिक पुनर्जागरण का साहित्य' है। भारतेन्दु युगीन साहित्य में

Vishal Bharti

राष्ट्रवाद का प्रबल पक्ष 'देश-प्रेम' रहा। यह राष्ट्रीयता का मूल-आधार था। भारतेन्दु एवं उनके समस्त सहयोगी इसी भावना से आप्लावित थे, इसमें सन्देह नहीं।

'भारतेन्दु' के पश्चात् 'जयशंकर प्रसाद' ने हिन्दी साहित्य का नेतृत्व किया। उन्होंने नैतिक श्रेष्ठता एवं परिभावना को विशेष महत्त्व दिया। उनकी रचनाओं न राष्ट्रवाद के सांस्कृतिक पक्ष की अभिव्यक्ति में पूर्ण सहयोग प्रदान किया है। 'निराला' की कृतियों में भी राष्ट्रीयता की प्रबल भावना परिलक्षित होती है। उनकी 'यमुना', 'खण्डहार के प्रति' तथा 'दिल्ली' आदि कविताएं सांस्कृतिक राष्ट्रीयता से ही सम्बन्धित हैं। प्रसाद एवं निराला के अतिरिक्त सुमित्रानन्दन पंत एवं महीयसी महादेवी वर्मा की कृतियों में भी सांस्कृतिक राष्ट्रीयता, राष्ट्र प्रेम की भावना का दर्शन होता है परन्तु वे अपेक्षाकृत अल्प-मात्रा में स्थान प्राप्त हैं। इनके पश्चात् आचार्य कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह के आविर्भाव से इस विचारधारा क साहित्य में युगान्तकारी परिवर्तन आया। इन्होंने साहित्य-सर्जन के लगभग समस्त क्षेत्र में अपनी लेखनी एवं प्रतिभा से योगदान दिया।

2. **साहित्य समीक्षाः**

विषय- "कुँवर चन्दप्रकाश सिंह के काव्यों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद"

भूमिका-

Vishal Bharti

सास्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा दीर्घकाल से वैश्विक चर्चा का केन्द्र रही है। संस्कृति अपने सभी पक्षों एवं आयामों में मानव–विकास का एक महत्त्वपूर्ण घटक और साधन है। यह एक जटिल समग्रता है, जिसमें ज्ञान, विश्वास, परम्पराएँ, आचरण, नैतिकता, कानून, कलात्मक–वैज्ञानिक एवं तकनीकि गतिविधियाँ, मानविकी और सामान्य विज्ञान का भण्डार शामिल है।

प्रेरणादायक विचारों एवं आदर्शों से ओत–प्रोत भारतीय संस्कृति का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। विश्व की अनेक सभ्यताएँ एवं संस्कृतियाँ नष्ट हो गई, किन्तु भारतोय संस्कृति एवं उससे जुड़ी हुई आध्यात्मिकता ने उसे जीवन्तता और प्राणवत्ता प्रदान की। अनेक झंझावातों के मध्य भारतीय चिति एवं उसकी अस्मिता अद्यावधि अक्षुण्ण बनी हुई है। भारत का सांस्कृतिक राष्टवाद मानवता का पर्याय वनकर वैश्विक स्तर पर अनुकरणीय बन गया है। 'राष्ट्रवाद' के पूर्व सांस्कृतिक चेतना को विशेषण के रूप में जोड़ने से उसमें जीवंतता का संचार हो जाता है। सांस्कृतिक अधिष्ठान राष्ट्रवाद की अंतःचेतना को समृद्ध एवं सुदृढ़ करता है। भारतीयता और उसकी राष्ट्रीयता की संकल्पना वस्तुतः सांस्कृतिक–चेतना से सम्पृक्त है, जिससे मानव का उन्मेश होता है।

वस्तुतः राष्ट्रवाद के पूर्व 'सांस्कृतिक' पद जोड़ने की महत्ता यही है कि वह हमें किसी भी प्रकार के अवमूल्यन से बचाए रखता है। राष्ट्र एवं सामाजिक जीवन

Vishal Bharti

के मूल्यों को स्खलित होने से रोकने के लिए सांस्कृतिक परम्परा के शाश्वत मूल्य हमें शक्ति प्रदान करते हैं।

छायावाद के अन्यान्य विरोधों के बाद आज यह सभी स्वीकार कर चुके हैं कि छायावाद हिन्दी की सर्वोत्तम काव्य प्रवृत्ति है। यह अनुभूति एवं अभिव्यक्ति की भंगिमा का काव्य है, जिसमें अनुभूति तथा अभिव्यक्ति का सौन्दर्य समानरूपेण महत्वपूर्ण है। कवि कुँवर जी का काव्य राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत है। उनके राष्ट्रीय गीत आधुनिक युग के सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रीय गीत हैं, ऐसा प्रो0 शिव मोहन सिंह का विचार है। उनके राष्ट्रीय गीतों में राष्ट्रोत्कर्ष तथा राष्ट्रीय भावना का गौरव स्पष्ट परिलक्षित होता है। वे सांस्कृतिक राष्ट्रीयता के उपासक हैं। कवि कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह के अनुसार सांस्कृतिक राष्ट्रीयता ही स्थायी राष्ट्रीयता है। राजनैतिक राष्ट्रीयता कभी भी क्षीण हो सकती है, परन्तु सांस्कृतिक राष्ट्रीयता चिरस्थायी होती है। कुँवर चन्द्र प्रकाश द्वारा प्रणीत काव्यकृति चाहे वह 'छा ले धरा व साम्य का काम्य सन्देश' हो अथवा 'जय शस्य श्यामा', 'ऋतम्भरा' हो अथवा 'भारतीय सैनिकों से' नामक कविता; में उन्होंने देश की युवा पीढ़ी की चित्तवृत्ति को पहचान कर अपनी तेजोमयी वाणी से राष्ट्रीय भावना का श्रगार किया है। उनकी राष्ट्रीय भावना में मातृभूमि के प्रति अनन्य अनुराग व्यक्त हुआ है। उनके देशप्रेम के गीतों में वैदिक मन्त्रों का सा गान भी विद्यमान है। इन गीतों के छन्दों की मन्थर गति भाषा में औदात्य का संचार करती है। मातृभूमि के गीतों

Vishal Bharti

में भारतवर्ष के उच्चतम आदर्शों, धार्मिक आस्थाओं–भावनाओं के साथ–ही–साथ आध्यात्मिक चेतना तथा युग–पुरुषों को भी स्मरण किया गया है। उनकी राष्ट्रीय भावना एवं सांस्कृतिक चेतना विराट है। वह देश प्रेम से प्रारम्भ होकर दिग–दिगन्त व्यापी रूप धारण करती है, जिसमें समग्र सृष्टि समायी हुई है। कवि चन्द्रप्रकाश की काव्य साहित्य साधना का मूलाधार सांस्कृतिक राष्ट्रीयता ही है। उनकी प्रत्येक कविता किसी न किसी रूप में राष्ट्र से जुड़ी हुई है। वे मातृ भाषा, मातृभूमि तथा मातृ संस्कृति के अनन्य उपासक कवि हैं।

3. **पूर्ववर्ती साहित्य का अवलोकन एवं तन्निहित सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की भावना**

वैदिक वाड्.मय एवं व्याकरणशास्त्र के आलोक में 'संस्कृति' एवं 'राष्ट्र' शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ एवं तत्गत मूल–भावना पर चिन्तन करने पर स्पष्ट होता है कि सांस्कृतिक राष्ट्रीयता से तात्पर्य राष्ट्रवाद के उस रूप से है, जो किसी राष्ट्र की पहचान तथा एकता को परिभाषित करने में जातीयता, भाषा, धर्म एवं संस्कृति के महत्त्व पर बल देता है, जो सामान्यरूपेण उन विचारों एवं प्रथाओं को सन्दर्भित करता है, जो किसी कथित राष्ट्रीय समुदाय की संस्कृति के पुनर्जीवन से सम्बद्ध होते हैं।

हिन्दी साहित्य में राष्ट्र–प्रेम एवं आह्वानपरक कविताओं के लेखन की सुदृढ़ एवं अविच्छिन्न परम्परा रही है। इनका प्रादुर्भाव द्विवेदीयुग में हो चुका था।

Vishal Bharti

कालान्तर में छायावादी कविता के समानान्तर ही सांस्कृतिक राष्ट्रीय कविताओं की स्वतन्त्र धारा अस्तित्व में आई। इनमें माखनलाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' प्रभृति कवि मुख्य हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी सरल भाषा एवं ओजपूर्ण भावनाओं के अनूठे रचनाकार थे। अपने उपनाम **'एक भारतीय आत्मा'** के अनुरूप ही राष्ट्रीयता उनके काव्य का कलेवर तथा रहस्यात्मक प्रेम उसकी आत्मा है। राष्ट्रप्रेम से अनुप्राणित 'पुष्प की अभिलाषा नामक कविता भारतीय जनमानस को आज भी ओज एवं नवस्फूर्ति से भर देती है। उनकी कविताओं में आदर्श का आडम्बर नहीं है। राष्ट्रीय संग्राम में अपना सर्वस्व बलिदान करने के कारण उनके स्वर में बलिपंथी की सच्चाई, निर्भीकता तथा कष्ट सहन करने की अदम्य लालसा की झंकृति है। उनकी **'युग तरुण से'**, **'प्रवेश'** तथा **'सेनानी'** आदि कविताएं राष्ट्र उद्‌बोधन काव्य के ही अन्तर्गत परिगणित की जाएँगी।

हिन्दी भाषा के सशक्त हस्ताक्षर सोहनलाल द्विवेदी की रचनाओं में महात्मा गाँधी के प्रतिविम्ब दृष्टिगत होते हैं। राष्ट्रीयता से आपूर्ण काव्य–सर्जन के कारण उन्हें राष्ट्रकवि की उपाधि भी दी गई। इनके द्वारा प्रणीत 'मातृभूमि', 'उठो–उठो', 'युगावतार', 'भारत', 'भैरवी' आदि कविताओं में राष्ट्रीय भावना का सम्पुट द्रष्टव्य है।

Vishal Bharti

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' का प्रथम कविता संग्रह <u>कुंकुम</u> (1936 ई0) में प्रकाशित हुआ जिसका मूल स्वर यौवनपूर्व का उद्दाम प्रणयावेग एवं प्रखर राष्ट्रीयता का है। इसी क्रम में कुँवर सिंह जी की समकालीन कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान का सादर उल्लेख किया जाना अपेक्षित है। वे राष्ट्रीय चेतना की सजग कवयित्री रही हैं। उनके द्वारा रचित 'हींगवाला, 'राही', 'तांगेवाला', 'गुलाब सिंह' आदि कहानियाँ राष्ट्रीय विषयों पर आधारित हैं, वहीं **'स्वदेश के प्रति', 'झण्डे की इज्जत में', 'झाँसी की रानी', 'वीरों का कैसा हो वसन्त'** तथा **'जलियाँवाला बाग में बसंत'** आदि प्रसिद्ध कविताएं राष्ट्र भक्ति, राष्ट्रप्रेम एवं राष्ट्राह्वान की मूल भावना से अनुप्राणित हैं।

भारतीय साहित्य अपने सांस्कृतिक मूलाधार का ऋणी रहा है। पं0 हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' नामक पुस्तक में हिन्दी साहित्य पर प्राचीन संस्कृत साहित्य के प्रभाव को रेखांकित करते हुए महाभारत और रामायण को असंख्य महाकाव्यों, उपन्यासों, नाटकों, कहानियों का उपजीव्य अथवा प्रेरक सिद्ध किया है। पालि, प्राकृति, अपभ्रंश अथवा अन्य देशज भाषाओं में प्रणीत बौद्ध–जैन साहित्य भी हमारी सांस्कृतिक चेतना का अंग है। आधुनिक काल म भी महर्षि अरविन्द हों या स्वामी दयानन्द अथवा शरतचन्द्र जैसे साहित्यकार सभी राष्ट्रवाद से प्रेरित हैं।

4. शोध का उद्देश्य एवं आवश्यकताः–

Vishal Bharti

छायावाद के पंचम एवं सशक्त स्तम्भ के रूप में कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह को हिन्दी जगत मे जो स्थान, सम्मान एवं महत्त्व प्राप्त होना चाहिए था, वह सम्प्रति उन्हें नहीं मिला। यद्यपि उनकी कृतियों की प्रशंसा समकालीन विद्वानों ने की परन्तु, वहीं दूसरी ओर एक पक्ष ऐसा भी था, जिसने इन्हें गौण कवि की श्रेणी में रख कर न केवल इनकी अवहेलना की, अपितु इनकी रचनाओं से नव–पाठकों का वंचित करने का प्रयास भी किया। तथापि वर्तमान समय में अनेक विद्वानों, अन्वेषकों, समीक्षाकारों के विशेष योगदान से उनकर पुनर्प्रतिष्ठा तो की ही गई साथ ही उनके रचना–संसार को शोध का केन्द्र भी बनाया गया, जिससे उनकी कृतियों में अन्तर्निहित तत्कालीन उद्भावनाओं, सन्देशों एवं रहस्यों का उद्घाटन किया जा सके। आज जहाँ सम्पूर्ण देश जाति–धर्म, सम्प्रदाय इत्यादि के नाम पर आन्तरिक विभाजन का दंश झेल रहा है, ऐसे कठिन समय में कवि कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह की रचनाओं में गुम्फित राष्ट्रीयता की भावना निश्चित रूपेण औषधि समान है। आवश्यकता है कि भारत वष को आन्तरिक सुदृढ़ता एवं एकत्व प्रदान करने के लिए उनकी ओजस्वितापूर्ण एवं राष्ट्रीय एकता की पाषक एवं उदघोषक रचनाओं का अमृतरस जन–मानस में प्रवाहित किया जाए। इसी आवश्यकता की प्रतिपूर्ति हेतु "कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह के काव्यों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद" संज्ञक शोध–शीर्षक का चयन किया गया है।

छायावाद के उन्नायक राष्ट्रकवि आचार्य कुँवर चन्द्रप्रकाश जी आधुनिक हिन्दी कविता के अन्यतम कवि हैं। उनके काव्य–सृष्टि की मूल चेतना सांस्कृतिक एवं राष्ट्रवादी है, साथ ही छायावाद की समस्त सम्भावित विशेषताओं से अभिसिंचित भी है। सत्य तो यह है कि निराला के पश्चात् अनुभूति की चारुता एवं अभिव्यक्ति की उत्कृष्टता के वे अन्यतम शिल्पी कवि हैं। उनकी राष्ट्रीय भावना का मूलाधार भारत की गौरवशाली परम्परा की अपराजेय संस्कृति है। इस संस्कृति की भूमिका पर विकसित उनकी राष्ट्रीय भावना को यदि हम समष्टिरूप में कहना चाहें तो उन्हें निस्सन्देह 'सांस्कृतिक राष्ट्रीयता का कवि' कहा जा सकता है। उनका काव्य–संसार आद्योपान्त देश–जागरण तथा राष्ट्रगौरव की भावना से ओत–प्रोत है, जिसे कसौटी के रूप में स्थापित कर शोधकर्ता अपने शोधशीर्षक से सम्बन्धित पूर्वकृत अनुसन्धान कार्यों को दृष्टिगत रखते हुए अपने शोधकाय को न्यायपूर्वक अग्रगति प्रदान करेगा।

5. **शोध प्रविधिः–**

प्रस्तावित शोध कार्य में निम्र्नलिखित शोध–प्रविधिया का आश्रय लेकर कवि कुँवर चन्दप्रकाश सिंह के काव्यों में निहित सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की भावना का उद्घाटन करते हुए उसकी साम्प्रतिक उपादेयता पर चिन्तन किया जाएगा–

क) **ऐतिहासिक पद्धति–** कुँवर जी की समकालिक राष्ट्रीय स्थिति के अध्ययनार्थ इस शोध–पद्धति का प्रयोग किया जाएगा। एतदान्तर्गत

Vishal Bharti

तत्कालीन महत्त्वपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कतिक एवं राष्ट्रीय घटनाओं से सम्बद्ध प्रामाणिक तथ्यों की पुष्टि कर क्रमानुसार व्यवस्थित किया जाएगा।

ख) **साहित्यिक आलोचनात्मक पद्धति–** इस शोध–पद्धति द्वारा कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह की काव्य कृतियों का आलोचनात्मक रीति से अध्ययन किया जाएगा, जिससे कि उनकी विचारधारा, रचनाओं का उद्देश्य तथा राष्ट्र के प्रति उनकी भावना समझने में सहायता प्राप्त होगी।

ग) **तुलनात्मक पद्धति–** आलोच्य महाकवि की विचारधारा का अन्य कवियों की राष्ट्रीय भावना से तुलना करने हेतु इस शोध पद्धति की आवश्यकता होगी, जिससे कि निष्कर्ष में प्रामाणिकता हो।

6. अध्याय–विभाजन–

वर्णन सौविध्य की दृष्टि से आलोच्य शीर्षांकित शोध–प्रबन्ध को अग्रांकित अध्यायों में विभाजित किया गया ह–

अध्याय–1 सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का विकास

- सांस्कृतिक राष्ट्रवादः अर्थ एवं क्रमिक विकास
- हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद
- आधुनिक काल के प्रमुख कवियों में राष्ट्रवाद

Vishal Bharti

- छायावाद तथा कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह का जीवनवृत्त एवं कर्तृत्व

अध्याय–2 चन्द्र प्रकाश सिंह की काव्य कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन

- कुँवर चन्द्र प्रकाश के गोति काव्यों एवं स्फुट काव्यों की समीक्षा।
- विजया, वृन्दावन एवं शम्बूक (खण्ड काव्य) की समीक्षापरक विवेचना।
- रामदूत, संकटमोचन एवं ऋषभदेव महाकाव्यों का समीक्षात्मक अनुशीलन

अध्याय–3 चन्द्र प्रकाश सिंह की काव्य कृतियों पर समकालीन छायावादी कवियों का प्रभाव

- निराला एवं चन्द्र प्रकाश सिंह
- पंत एवं चन्द्र प्रकाश सिंह
- प्रसाद एवं चन्द्र प्रकाश सिंह
- महादेवी वर्मा एवं चन्द्र प्रकाश सिंह
- चन्द्र प्रकाश सिंह एवं अन्य छायावादी कवि

अध्याय–4 कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह की अन्य कृतियों में सांस्कृतिक राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रभाव

Vishal Bharti

- नाटक
- एकांकी
- अन्य कृतियाँ

<u>अध्याय–5</u> कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह का परवर्ती कवियों पर प्रभाव

उपसंहार छायावादी कविता में सांस्कृतिक राष्ट्रवादः गुण एवं दोष

- **शोध निष्कर्ष**
- **सहायक ग्रन्थ सूची**
    - मूल ग्रन्थ
    - इतिहास ग्रन्थ
    - समीक्षा ग्रन्थ
    - अन्य शोध प्रबन्ध
    - शोध पत्र एवं पत्रिकाएँ

Vishal Bharti

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गीत शतक : संलकन–डॉ0 गजेन्द्र सिंह भदौरिया, माँ सावित्री फाउण्डेशन प्रकाशन, 2/22 त्रिवेणी नगर लखनऊ।

2. छा ले धरा साम्य का काम्य सन्देश– प्रो0 शिव मोहन सिंह–प्रांजल पब्लिकेशन, सी–33, शिवानी बिहार, कल्याणपुर, लखनऊ।

3. छायावादः शताब्दीवर्ष (महाकवि कुँवर चन्द्रप्रकाश सिह की सांस्कृतिक राष्ट्रीय कविता–प्रो0 शिवमोहन सिंह–माँ सावित्री फाउण्डेशन पब्लिकेशन, लखनऊ।

4. कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह ग्रन्थावली (सम्पूर्ण खण्ड)– प्रधान सम्पादक, प्रो0 शिव मोहन सिंह एवं शशि प्रकाश सिंह–माँ सावित्री फाउण्डेशन पब्लिकेशन, लखनऊ।

5. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद– ये ब्रजवल्लभ द्विवेदी–शैव भारती शोध प्रतिष्ठानम् प्रकाशन, 2004

6. छायावादोत्तर प्रतिनिधि कवि और उनकी कविताएं–डॉ शम्भुनाथ त्रिपाठी–विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी–2016

7. छायावादोत्तर हिन्दी कविता–रामदरश मिश्र–पुनीत बुक्स पब्लिकेशन, दिल्ली, 2018

Vishal Bharti

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Vishal ~~Yadav~~ . Bharti
Title	Kunvar Chandraprakash
Paper/Submission ID	4109053
Submitted by	rjmauryauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-07-19 15:37:19
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity	**0%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

Vishal Bharti

0

ARITY %

0

MATCHED SOURCES

A

GRADE

A-Satisfactory (0-10%)
B-Upgrade (11-40%)
C-Poor (41-60%)
D-Unacceptable (61-100%

MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE

Vishal Bharti